प्रेस विज्ञप्ति 04-12-14

आध्यात्मिकता ही मानव को मानव से जोड़ती है- माननीय कप्तान सिंह सोलंकी

विश्व के हरेक देश की अपनी अलग-अलग पहचान रही है, लेकिन आज हम देखते हैं कि उनकी वो पहचान नही रही। भारत की वही पहचान आज भी सारे विश्व में बनी हुई है, वो है आध्यात्मिकता, जब तक भारत में आध्यात्मिकता है, भारत जिन्दा रहेगा। बिना अध्यात्मिकता के मानव पशु समान है। आध्यात्मिकता ही मानव को मानव से जोड़ती है। उक्त विचार हरियाणा के राज्यपाल माननीय कप्तान सिंह सोलंकी ने **गुड़गाँव**,बहोड़ाकलां, ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर के 14 वें वार्षिक उत्सव एवं स्प्रिचुअल कार्निवाल के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये। उन्होने कहा कि आज विश्व में जितने भी ग्रन्थ हैं उनमें गीता ही सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जो कि पूर्णतः आध्यात्मिक ज्ञान को प्रकट करता है। आज अगर हम चाहें कि आदमी, आदमी बना रहे तो उसके लिए आध्यात्मिकता की बहुत आवश्यकता है।
उन्होने कहा कि ये ईश्वरीय विश्व-विद्यालय नर को नारायण बनाने की सेवा कर रहा है। मैं इनके मुख्यालय माउन्ट आबू भी गया हूँ, जो शान्ति और चमक यहाँ के भाई-बहनों के चेहरे पर नज़र आती है वो मैंने अन्यत्र नहीं देखी। अगर इस प्रकार के रिट्रीट सेन्टर हमारे देश अथवा विश्व में बड़े स्तर पर खोले जाएं तो, सरकार का काम काफी आसान हो जाएगा और आतंकवाद एवं भ्रष्टाचार पर भी नियंत्रण हो जायेगा। अगर हमें आज सही दिशा में जाना है तो इस प्रकार के ज्ञान का हमारे जीवन में होना नितान्त आवश्यक है। उन्होने कहा कि मुझे स्वयं पर गर्व है कि मैं एक ऐसे राज्य का राज्यपाल हूँ जहाँ पर इतना सुन्दर रिट्रीट सेन्टर है।

कार्यक्रम में बोलते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र० कु० ब्रजमोहन ने कहा कि ये रिट्रीट सेन्टर दिल्ली के कोलाहल से दूर आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है, यहाँ पर आकर हर व्यक्ति सहज ही मानसिक एवं शारीरिक शान्ति का अनुभव करता है। उन्होने कहा कि ये विश्व-विद्यालय वो शिक्षा देता है जो कि आज किसी भी स्कूल एवं कॉलेज में नही दी जाती। यहाँ पर मानव के चरित्र के निर्माण की शिक्षा दी जाती है। जैसे कि आज भी हम गायन करते हैं कि हमारा देश सोने की चिड़िया था, जिसका मुख्य कारण हमारे श्रेष्ठ नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का होना है। भारत ही एक ऐसा देश रहा है जो आध्यात्मिक और भौतिक दोनों रूप से सम्पन्न रहा है। उन्होने कहा कि ये रिट्रीट सेन्टर भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय से मान्यता प्राप्त है, यहाँ पर कम्पनीज् के लिए भी अनेक कार्यक्रम होते रहते हैं। सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय के द्वारा भी राष्ट्रीय एकता शिविरों का आयोजन समय-समय पर किया जाता है।

ओआरसी की निदेशिका ब्र० कु० आशा ने कहा कि कई लोग समझते हैं कि आध्यात्मिक होना अर्थात् घरबार का त्याग करना। उन्होने कहा कि आध्यात्म और कर्म दोनों अलग-अलग नही हैं, दोनों का समन्वय ही जीवन में सुख, शान्ति एवं शक्ति प्रदान करता है। यहाँ पर जो भी आते हैं उनके जीवन में जब परिवर्तन आता है तो फिर वो अपने परिवार को भी लाते हैं, जिससे अनेक परिवार बहुत खुशहाल होते जाते हैं। हमारे इस कार्निवाल का उद्देश्य भी यही है कि कैसे परिवारों में पुनः प्रेम एवं सद्भाव का संचार किया जाए।

ओआरसी की संयुक्त निदेशिका ब्र॰ कु॰ गीता ने अपने जीवन से जुड़े हुए अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि जब मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आई तो मुझे शान्ति का बहुत गहन अनुभव हुआ, जिसके कारण मैं सर्म्पूण रूप से यहाँ से जुड़ गई। उन्होने कहा यहाँ आने के बाद मेरा यही अनुभव रहा कि जो भी समस्यायें जीवन थी, वो परमात्मा की याद की शक्ति से स्वत: ही समाप्त हो गई। दिल्ली से आये ब्र॰ कु॰ सुरेश ने सबका धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन ओआरसी की राजयोग प्रशिक्षिका ब्र॰ कु॰ रंजना ने किया। कार्यक्रम में क्षेत्र की विधायक श्रीमती विमला चौधरी भी उपस्थित थी।